PART-**1**

यूनानी भूगोलवेत्ता- होमर

डॉ. राजेश कुमार सिंह, भूगोल विभाग

SNSRKS महाविद्यालय सहरसा

यूनानी भूगोलवेत्ता (Greek Geographers)

पृथ्वी के विभिन्न भागों के पर्यावरण और उनके निवासियों की जीवन पद्धति पर वर्णनात्मक लेखन का आरंभ यूनान में नौवीं शताब्दी ईसा पूर्व में हो गया था । तत्कालीन महाकवि होमर (Homer) की दो काव्य रचनाओं में महत्वपूर्ण भौगोलिक वर्णन मिलते हैं। इसके पश्चात् के वर्षों में थेल्स (Thales), अनेग्जीमैण्डर (Anaximander), हेकैटियस् (Hecataeus), हेरोडोटस (Herodotus), अरस्तू (Aristotle), थियोफ्रेस्टस (Theophrastus), इरेटोस्थनीज (Eratosthenes), पोलीबियस (Polybius), हिप्पारचुस (Hipparchus), पोसिडोनियस (Posidoneus) आदि प्रमुख यूनानी विद्वानों ने भौगोलिक ज्ञान को आगे बढ़ाने में महत्वपूर्ण योगदान दिया। अग्रांकित पंक्तियों में इन यूनानी विद्वानों के योगदानों की संक्षिप्त चर्चा की गयी है।

(1) होमर (Homer)

यूनानी महाकवि होमर ने ईसा पूर्व नौवीं शताब्दी में दो महाकाव्यों — इलियड (Iliod) और ओडिसी (Odysey) की रचना की थी। छन्दबद्ध इन ग्रंथों में स्थान-स्थान पर स्थानों, जनपदों, पर्यावरणीय दशाओं, मानव वर्गों आदि के भौगोलिक वर्णन मिलते हैं। होमर के 'ओडिसी' नामक महाकाव्य में तत्कालीन यूनानी विद्वानों को ज्ञात विश्व की परिधि पर स्थित विभिन्न स्थानों और प्रदेशों का सजीव चित्रण मिलता है। इस महाकाव्य का नायक ओडेसस है। इसमें ट्राय (राज्य) के पतन के पश्चात् ओडेसस की इथाका (स्वदेश) वापसी का वृत्तांत हैं। इस यात्रा की अवधि में उसकी नौका तूफान में फंस जाने से उसकी दिशा बदल गयी और वह 20 वर्ष बाद स्वदेश पहुँच पाया। इस लम्बी यात्रा में उसे जिन-जिन स्थानों से गुजरना पड़ा, उसका काव्यमय रोमांचक वर्णन इस ग्रंथ में किया गया है। होमर के विचार से पृथ्वी के सभी ओर समुद्र है और सूर्य प्रतिदिन प्रातः समुद्र से निकलता है और सायंकाल पुनः उसी समुद्री जल में डूब जाता है।